डॉ०शैलेन्द्र मोहन मिश्र
स०प्रा० मैथिली विभाग
सी०एम०जे०कॉलेज
दोनवारी हाट , खुटौना
मो० न०9546743796 , 9434306082
Email- mishrasm966@gmail.com

पारिजातहरण : एक परिचय

प्राचीन नाटक सभ संस्कृत - प्राकृतमय अछि । कवि पंडित मुख्य उमापति उपाध्याय मध्यकालीन मैथिली साहित्यक अत्यंत लोकप्रिय नाटककार ओ गीतकार थिकाह । हिनक नाटक ' पारिजातहरण ' एक एहन नाटक अछि , जाहिमे लोकभाषा सर्वप्रथम प्रयुक्त भेल। ई नाटक मैथिलीक कीर्तनियाँ परम्पराक प्रतिनिधित्व करैत रहल अछि । जँ ई बुझल जाए जे ई मध्यकालक अत्यंत लोकप्रिय कीर्तनियाँ रंगमंचक आश्रय लए वर्तमान शताब्दीक आरम्भिक काल धरि जीबैत रहल अछि , त कोनो अत्युक्ति नहि ।

मध्यकाल कें नाटकक युगक संज्ञा देल गेल अछि । कारण मिथिले नहि , मिथिला सँ बाहर नेपाल , आसाम मध्य सेहो एहि परम्पराक प्रचलन वेश भेल आ ओ निश्चय एहि कालकें प्रभावित कएने रहल । मध्यकाल मे अनेको नाटकक रचना भेल आ अपना समय मे कीर्तनियाँ रंगकर्मी द्वारा ओकर अभिनयो होइत रहल। परन्तु जे लोकस्वीकृति उमापति कृत 'पारिजातहरण' कें भेटल से आन नाटककें नहि ।

एहि नाटकक रचयिता उमापति उपाध्यायक कालक संबंधमे अनेक मत - मतांतर अछि । हिनक निश्चित समय कतय सँ मानल जाए से अद्यावधि विवादास्पद अछि । एहि प्रसंग दू प्रकारक मत अछि । जार्ज ग्रियर्सन उमापतिक समय 14 म शताब्दी मानैत छथि कारण नाटकक प्रस्तावना मे उमापति जाहि हरिहरदेवक चर्चा कएलनि अछि ओ हरिहरदेव कर्णाटवंशीय राजा हरिसिंहदेव थिकाह , जनिक समय 1324 ई० थिक । नाटक मध्य सूत्रधारक उक्तिमे हरिहरदेव कें " यवनवन च्छेदन कराल करवाल " तथा " धर्म संस्थापक " कहल गेल अछि । म०म० उमेश मिश्र सेहो ग्रियर्सन साहेबक मतक समर्थक छथि । ओना एक तर्क दए ओ ई कहैत छथि जे उमापतिक भाषा विद्यापतिक भाषा सँ प्राचीन अछि ब तथा दुनू मे साम्य सेहो अछि । तैं ओ विद्यापति सँ उमापति कें पूर्ववर्ती मानैत छथि ।

पं० चेतनाथ झाक मत छनि जे हरिहरदेव नेपाल राज्यक अंतर्गत सप्तरी परगना स्थित मकमानीक राजा छलाह , जनिक आश्रित रहि उमापति काव्यक रचना कएलनि । डॉ० जयकान्त मिश्र अपन इतिहासमे लिखैत छथि जे ई हरिहरदेव जे हिन्दूपति कहबैत छलाह से बुंदेलखंड प्रान्तक गाढ़ा मण्डल राज्यक अधिपति रहथि जे प्रसिद्ध राजा छत्रशालक प्रपौत्र तथा हृदयशालक पौत्र छलाह । हिनक समय 1696 ई० थिक । सम्भव थिक जे महाराज महेश ठाकुर जे गाढ़ा यात्रा कएने छलाह हुनके संग इहो गेल होथि आओर अपन विद्या वैभव सँ ओहि राज्यक राज्यगुरु बनि गेल होथि । कारण जे ई अपन कविताक भनिता मे ' गुरु उमापति' सेहो लिखने छथि । अतः ओही हरिहरदेवक काल मे ई नाटक लिखल गेल । आचार्य रमानाथ झा एहि मतक समर्थन कएने छथि ।

ग्रियर्सनक मत विद्वान लोकनि कें मान्य नहि छनि । उमापति कें विद्यापतिक पूर्ववर्ती मानबा मे आपत्ति ई अछि जे ' रागतरंगिणी ' मे उमापतिक गीतक उल्लेख नहि अछि । यदि उमापति विद्यापति सँ पूर्ववर्ती रहितथि त हुनक गीत लोचनक रागतरंगिणी मे अवश्य रहितैक । एहि प्रसंग डॉ०जयकान्त मिश्र लिखैत छथि- " This identification of the patron of Umapti is likely to explain the absence of any quotation of

Umaptis poems in lochans ragtarangini either because hmari flourished later than lochna or because he wrote his drama in his early days in a foreign land . "

एतावता उमापतिक नाटक मिथिलाक राजदरबार कें ध्यान मे राखि लिखल गेल छल । आन जे कोनो मिथिलाक कीर्तनिया नाटक भेटैत अछि ताहि मे स्थान - गत वैशिष्ट्य देखबा मे अबैत अछि । किंतु उमापति ओहि सँ भिन्न मार्ग ग्रहण कएने छथि । पं०चेतनाथ झाक मत 1704 ई० सँ 1740 ई० तथा डॉ० जयकान्त मिश्रक मत 1696 ई० । एहि दुनूमे अधिक भेद नहि अछि । अतएव ई निर्णय कएल जा सकैत अछि जे उमापतिक समय 18म शताब्दीक प्रारम्भिक काल (पूर्वार्द्ध) छल ।

हिनक जन्मक समयक कोनो निश्चितता नहि अछि तहिना हिनक निवास स्थानक विषय मे सेहो विवाद अछि । केओ हिनका मंगरौनी वासी कहैत छथि , त पं० चेतनाथ झा पारिजातहरणक भूमिका मे हिनका कोइलख वासी कहैत छथि । पंजीक आधार पर प्रो०रमानाथ झा ई सिद्ध कएलनि अछि जे पारिजात हरणक रचनाकार उमापति कोइलखहिक वासी छलाह।
" पारिजातहरण " नाटक पं० उमापति उपाध्याय द्वारा लिखल गेल अछि । यद्यपि मैथिली साहित्य मे एक सँ अधिक उमापति भए गेल छथि तथापि ई निर्णीत जकाँ अछि जे " पारिजातहरण " नाटकक रचयिता पंडित मुख्य उमापति उपाध्याय छलाह । ई रत्नपाणि उपाध्याय एवं रत्नवतीक पुत्र छलाह ।

एखन धरि पारिजातहरणक पाँच संस्करण प्राप्त अछि -

¡. चन्दा झाक संस्करण - 1893 ई० मे दरभंगा सँ ।
¡¡. बिहार उड़ीसा रिसर्च सोसायटी सँ डॉ० ग्रियर्सन
द्वारा सम्पादित अंग्रेजी अनुवाद सहित ।
¡¡¡. पं० चेतनाथ झाक संस्करण दरभंगा सँ ।
¡v. पं० सुरेंद्र झा ' सुमन ' द्वारा सम्पादित दरभंगा सँ।
V. प्रो० जयदेव मिश्र , डॉ० मदनेश्वर मिश्र , श्री योगानंद
झाक सम्पादकत्व मे मैथिली अकादमी पटना सँ
1984 ई० मे ।

उमापति उपाध्यायक मात्र एक कृति नाटकक रूपमे 'पारिजातहरण 'उपलब्ध होइत अछि । ई कीर्तनियाँ परम्पराक एक प्रमुख ओ विलक्षण नाटक थिक । एहि नाटकक कथावस्तु हरिवंश , श्रीमद्भागवत एवं विष्णुपुराण पर आधारित अछि । एकर कथावस्तु पौराणिक अछि जे भारतीय संस्कृतिक प्रबल तत्व ओ कृष्ण लीला कीर्तनक आधारशिला पर स्थित अछि । ऐतिहासिक एवं पौराणिक आधार रहलाक कारणें एकर कथावस्तु पूर्ण रोचक भए गेल अछि । एहि नाटकक कथावस्तु सबसँ बेसी हरिवंश पुराण सँ लेल गेल अछि। कृष्ण विष्णुक आठम अवतार मानल जाइत छथि । ओना त ई मान्यता अछि जे श्री कृष्ण कें अनेको पत्नी छलथिन , मुदा ओहिमे जेठि रुक्मिणी आ छोटि सत्यभामा छलीह । सत्यभामा श्री कृष्णक परम प्रिय छलीह संगहि दुलारू सेहो छलीह तैं कृष्ण कें हिनकर विशेष ध्यान राखए पड़ैत छलनि ।

स्वर्गमे देवराज इन्द्रक फुलवारीमे पारिजातक गाछ अछि , जकरा संपूर्ण मनोकामना पूर्ण कएनिहार वृक्ष कहल जाइत अछि । एक बेर नारद जखन श्रीकृष्णक दर्शनार्थ द्वारका अएलाह त ओ भेंट स्वरूप पारिजात क पुष्प कृष्ण कें देलथिन । ओ पुष्प कृष्ण लगमे बैसल रुक्मिणी कें दए देलथिन । ई बात बुझितहि सत्यभामा सौतिनिया डाह सँ स्याह भए गेलीह आ कृष्ण सँ रूसि गेलीह । कृष्ण जखन ई बुझलनि जे सत्यभामा रूसि कए मान कए बैसलि छथि त ओ हुनका मनाबए पहुँचैत छथि । श्री कृष्ण कें अनेको मनेबाक क्रममे ओ कहैत छथि जे हमरा पारिजातक पुष्प नहि , गाछे चाही । मानिनी सत्यभामाक मान तोड़बाक हेतु श्रीकृष्ण तुरंत देवराज इंद्रकें समाद दैत छथि ,जे पारिजातक गाछ हमरा पठा दिअ । मुदा श्रीकृष्णक ई आदेश देवराज इंद्र कें स्वीकार्य नहि । देवराजक द्वारा पारिजातक वृक्ष नहि पठेबाक असहमति बुझि कृष्ण क्रोधित भए जाइत छथि। ओ अर्जुनक संग मिलि स्वर्ग पर

चढ़ाई करैत छथि । इन्द्र युद्धमे पराजित होइत छथि । एहि प्रकारें श्रीकृष्ण सत्यभामा कें पारिजातक वृक्ष आनि दैत छथि। सत्यभामा एहि वृक्ष कें अपना आँगनमे रोपि देलनि । एही समय नारद उपदेश दैत छथि जे पारिजातक गाछ तर बैसि कए जे किछु दान ब्राह्मण कें देल जाइत अछि ओ दान इहलोक - परलोकमे अक्षय रहि जाइत छैक । सत्यभामा अपन प्रियतम कृष्ण कें आ सुभद्रा अर्जुन कें पारिजातक छाहरि मे बैसि नारद कें दान करैत छथि । एहि प्रकारें कृष्ण आ अर्जुन नारदक टहलू बनि गेलाह। नारद दुनू गोटा कें बेचबाक विचार प्रकट कएलनि । सत्यभामा कृष्ण कें आ सुभद्रा अर्जुन कें कीनि लेलनि। नारद कें मूल्यस्वरूप दुनू गोटे एकटा कए गाय देलथिन। एहि तरहें ई नाटक सुखान्त अछि ।

संस्कृत नाटकीय लक्षण सँ युक्त ई नाटक पूर्ण श्रेष्ठ तथा उच्च कोटिक कहल जा सकैत अछि । आकारमे क्षीणकाय रहितहुँ एहि नाटकमे कार्यावस्थाक पाँचो भेद- प्रारंभ , प्रयत्न , प्रापत्याशा , नियताप्ति , एवं फलागम क्रमशः एकक बाद दोसर भेटैत अछि । संस्कृत नाट्याचार्य लोकनिक अनुसारें नाटकमे पाँच टा अंक होएबाक चाही । मुदा उमापति सदृश पंडितक लिखल एके अंकक अभिनय नाटक कोना कहाओत । लेकिन जखन एहि नाटकक अन्तस्तल मे प्रवेश कए देखैत छी त ई स्पष्ट भए जाइत अछि जे पांच अंकक नाटक नहियो रहने लेखक अपन बुद्धि कौशल सँ नाटकीय सकल लक्षणक प्रयोग एहि एके अंकमे कए देल गेल अछि । यथा नान्दी , प्रस्तावना , विषकम्भक , प्रवेशक तथा भरतवाक्य आदि ।

मैथिलीमे कोन रूपें नाटक लिखल जयबाक चाही , केहन नाटक समाज सापेक्ष ओ उपादेय होएत तकरा ध्यान मे रखैत उमापति एक नवीन पद्धति चलाओल , नाटक लिखबाक नवीन परिपाटी वा नवीन शैली चलाओल । ई शास्त्रीय मर्यादाक पालनो कएलनि एवं किछु अंशमे ओकर परिहारो कएलनि ।

नाटक मध्य दृश्य विभाजनक योजना बेस महत्व रखैत अछि । एहि मध्य सेहो दृश्यक विभाजन 'प्रविशति' , ' निशक्रान्तः ' , आदि शब्द सँ सूचित अछि। एकर अतिरिक्त ' परिक्रम्य ' , ' नारदं प्रति ', ' श्री कृष्ण निकटं ' आदि प्रयोग सँ स्पष्ट अछि जे नाटककार कें रूपक रचनाक पूर्ण ज्ञान छलनि ।

(क्रमशः)